

SHRI KAILASH MADBAIYA

Shri Kailash Madbaiya is a famous writer of Bundeli language. He has revived an ancient Bundeli language, popular in the Bundelkhand region of Central India through his numerous literary books and articles. Through his research and writings, he has shown that in 9th, 10th and 11th century, Chandela-Bundela rulers used Bundeli language in creating folk songs, folk literature and popular Bundeli culture, characterized by honesty, truth, fairness, humanity, kindness and compassion. Through his literary prose and verses, he has shown that Bundeli language, Bundeli culture are vital in Modern India for preserving the core Indian values of Truth, Ahimsa, Honesty and compassion.

2. Born on December 2, 1943, Shri Madbaiya received M.Sc., B.Ed. and L.L.B. Degree from A.P.S. University, Rewa, M.P. He worked as a Lecturer in Education Department in M.P. Government and retired as a Joint Commissioner of cooperation in M.P. Government, Bhopal in 2003. He started his literary journey as early as in 1958 and continues to write. He has written, edited and published 28 books on Bundeli folk language, during the last five decades. He is known for his contribution to enrichment of folk literature of India.

3. Shri Madbaiya had represented Hindi heartland, in international poetry conference at New Delhi. He recited appreciable poetry in world class conference, at the time of commonwealth games held in India. He has written many books, especially folk literature. His 28 books have been published and most of his books were awarded and some of his works now form part of syllabus in Indian Universities. Some of his popular books are-JAY VEER BUNDELE JWANAN KI, BUNDELI KE LALIT NIBANDH, BUNDELI BHAKTAMAR and BUNDEL KESARI CHHATRASA NATAK, Angan Khili Jundaiya and Banpur etc.

4. Shri Madbaiya earned recognition in 10 countries-the US, Japan, Mauritus, Dubai, Nepal, Singapore etc. He is recognized as BHARTENDU HARISHCHANDRA of Bundeli literature. He delivered lectures, recited poetry and read papers in universities at Jhansi, Sagar and Lucknow etc. Leading papers and magazines of the country published his research articles. He spearheaded Mankikaran movement so that Hindi Bundeli could get its rightful place.

5. Shri Madbaiya was presented prestigious awards at national and international platform. He has received more than 45 awards including Kathmandu International Sahitya Srajan Samman 2014, Singapore Sahitya Samman on Gandhi Jaynti 2015, Sahitya Varidhi Prayag H.S., Shanti Devi Purskar, Bharat Bhooshan Samman 2016 , Lok Bhushan, 2016, highest award in folk literature, Raja Birsingh Dev Purskar Orchha State etc. He has also received awards and prizes for his monumental work on Bundeli folk language at local, regional, national and international level. His contribution is and will serve as an inspiration for generations to come. At present, he is the national President of Akhil Bhartiya Bundelkhand Sahitya and Sanskriti Parishad, Bhopal.

पद्म श्री



श्री कैलाश मड़बैया



श्री कैलाश मड़बैया बुंदेली भाषा के जाने-माने लेखक हैं। आपने मध्य भारत के बुंदेलखंड में लोकप्रिय प्राचीन बुंदेली भाषा को अपनी कई साहित्यिक पुस्तकों और लेखों के माध्यम से पुनर्जीवित किया। अपने अनुसंधान और लेखन कार्य के जरिये, आपने यह जता दिया है कि नौंवी, दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दी में चंदेला-बुंदेला शासकों ने लोक गीत, लोक साहित्य तथा लोकप्रिय बुंदेली संस्कृति के सृजन में ईमानदारी, सत्य, सदाचार, मानवता, दया तथा सहानुभूति के गुणों से ओतप्रोत बुंदेली भाषा का प्रयोग किया था। आपने अपने साहित्यिक गद्य और पद्य से यह साबित कर दिया है कि सत्य, अंहिसा, ईमानदारी तथा सहानुभूति जैसे भारत के महत्वपूर्ण मूल्यों को आधुनिक भारत में बनाए रखने के लिए बुंदेली भाषा तथा बुंदेली संस्कृति महत्वपूर्ण हैं।

2. आपका जन्म 2 दिसंबर, 1943 में हुआ था। आपने एपीएस विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश से एमएससी, बीएड और एलएलबी की डिग्री प्राप्त की। आपने मध्य प्रदेश सरकार के शिक्षा विभाग में प्रख्याता के रूप में कार्य किया और मध्य प्रदेश सरकार में सहकारिता के संयुक्त आयुक्त के पद से सेवानिवृत्त हुए। आपने वर्ष 1958 से ही साहित्यिक लेखन शुरू कर दिया था और अभी तक साहित्यिक लेखन का कार्य कर रहें हैं। आपने विगत 5 दशकों के दौरान बुंदेली लोक भाषा पर 28 पुस्तकें लिखीं, संपादित की तथा प्रकाशित की हैं। भारत के लोक साहित्य में आपके योगदान के लिए आपको जाना जाता है।

3. आपने नई दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय काव्य सम्मलेन में हिंदी भाषी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया था। आपने भारत में सम्पन्न राष्ट्र मंडल खेलों के दौरान इस विश्वस्तरीय सम्मेलन में सराहनीय काव्य पाठ किया था। आपने विशेषकर लोक साहित्य पर कई पुस्तकों की रचना की। आपकी 28 पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है और आपकी अधिकतर पुस्तकें पुरस्कृत हुई हैं तथा आपकी कुछ पुस्तकें विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में शामिल हैं। जयवीर बुंदेले जवानों की, बुंदेली के ललित निंबध, बुंदेली भक्ताम्बर तथा बुंदेल केसरी छतरस नाटक, आंगन खिली जुन्दैया तथा बानपुर आदि जैसी आपकी लोकप्रिय पुस्तकें हैं।

4. आपको अमेरिका, जापान, मॉरीसस, दुबई, नेपाल, सिंगापुर जैसे दस देशों में ख्याति मिली। आपको बुंदेली साहित्य का भारतेन्दु हरिश्चन्द्र माना जाता है। आपने झांसी, सागर तथा लखनऊ आदि में स्थित विश्वविद्यालयों में व्याख्यान दिए हैं, काव्य पाठ किये है और आलेख पढ़े हैं। देश के प्रतिष्ठित पत्रों तथा पत्रिकाओं में आपके अनुसंधान आलेख प्रकाशित हुए हैं। आपने मानकीकरण आंदोलन का नेतृत्व किया ताकि हिन्दी बुंदेली भाषा को उसका सही स्थान मिल सके।

5. आपको राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाजा गया। आपको काठमांडू साहित्य सृजन सम्मान, 2014, गांधी जंयती के अवसर पर सिंगापुर साहित्य सम्मान 2015, साहित्य वारिधि प्रयाग एचएस, शांति देवी पुरस्कार, भारत भूषण सम्मान 2016, लोक साहित्य का शीर्ष पुरस्कार लोक भूषण 2016 पुरस्कार, राजा बीरसिंह देव पुरस्कार ओरछा राज्य आदि सहित 45 से भी अधिक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। आपको बुंदेली लोक भाषा पर अद्वितीय कार्य करने के लिए स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। बुंदेली साहित्य में आपका योगदान सराहनीय है और भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्पद रहेगा । इस समय आप अखिल भारतीय बुंदेली सहित्य और संस्कृति परिषद, भोपाल के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।